वैदिक गणपति

(वैदिक, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं सार्वजनिक स्वरूप)



मदन रहेजा

लेखक : **मदन रहेजा**
4, रंजना सोसायटी, 418/ए, अहिंसा मार्ग,
खार (प.), मुम्बई-400052 (भारत)
मोबाइल : 9820364787
email : madanraheja@rahejas.org
website : vedicdharma.rahejas.org
blog : vedicdharma.blogspot.com

प्रकाशक : **विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द**
4408, नई सड़क, दिल्ली-110 006
दूरभाष : 23977216
e-mail : ajayarya16@gmail.com
Website : www.vedicbooks.com

वैदिक-ज्ञान-प्रकाश का गरिमापूर्ण 93वाँ वर्ष (1925-2018)

द्वितीय संस्करण : 2018

मूल्य : ₹ 85.00

मुद्रक : नवशक्ति प्रिंटर्स, दिल्ली-110 032

सत्य सनातन वैदिक धर्म में आस्था रखने वाले हमारे पाठकवृन्द 'शिव पुराण' की उपर्युक्त कथा में कभी विश्वास नहीं कर सकते। साधारण लोग भी निम्नलिखित अनेक प्रकार के प्रश्न पूछते हैं। यहाँ उन प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करेंगे।

प्रश्न 1. क्या माता पार्वती जी प्रतिदिन नहाती थीं या कभी-कभी? यदि प्रतिदिन नहाती थीं तो घर की रखवाली कौन करता था और यदि कभी-कभी नहाती थीं तो वह भगवान् शिव की पत्नी कैसे हो सकती थीं क्योंकि भगवान् की पत्नी होकर कभी-कभी नहाना उचित नहीं लगता।

प्रश्न 2. क्या माताश्री, भगवान शिवशंकर के घर से बाहर जाने के बाद ही नहाती थीं? यदि हाँ तो शिवजी कहाँ जाते थे? यदि कहो कि वे ध्यान करने कहीं दूसरे स्थान पर जाते थे तो क्या उनका ध्यान घर पर नहीं लगता था? वे किसी का ध्यान करते थे? हिन्दू भाई शिव-शंकर को ही सदाशिव अर्थात् ईश्वर मानते हैं क्या ईश्वर किसी दूसरे ईश्वर का ध्यान करता है? ईश्वर एक है या अनेक?

प्रश्न 3. माता पार्वती इस से पहले भी नहायी होंगी तो उन्होंने इसी प्रकार से अपने कान की मैल से बच्चों को उत्पन्न किया था? यदि हाँ तो उनके नाम कौन से हैं और उनका वर्णन किस पुराण में है? इसी से प्रमाणित होता है कि शिव पुराण की यह कथा दन्तकथा है जिसका कोई आधार या प्रमाण नहीं होता।

प्रश्न 4. क्या माता जी के शरीर पर इतना उबटन लगा था कि एक बच्चे का पिण्ड बन सकता था? यह भी कल्पित है। मनुष्य का कान इतना छोटा और उसमें इतनी अधिक मैल होना-यह मेल नहीं खाता।

प्रश्न 5. क्या कैलास पर्वत में अनेक लोगों का आना-जाना था कि घर की देख-भाल के लिये एक पहरेदार की आवश्यकता पड़ती थी? पहरेदार की आवश्यकता तभी पड़ती है जब कोई बिना पूछे घर में घुस आता है या फिर घर के द्वार पर ताला नहीं

होता। भगवान शिव के घर पहरेदार की आवश्यकता क्योंकर पड़ी? वैसे भी भगवान कहाने वाले मनुष्य ही होते हैं, ईश्वर नहीं।

प्रश्न 6. क्या माता जी अपनी सहेलियों के संग करोड़ों वर्ष तक नहाती रहीं और किसी को भी ठंड नहीं लगी? कैलास पर्वत सदा बर्फ से ढका रहता है और वहाँ लम्बे काल तक नहाया नहीं जा सकता। ऐसा प्रतीत होता है कि जिस व्यक्ति ने 'शिव पुराण' लिखा होगा वह अवश्य ही किसी रेगिस्तान का निवासी रहा होगा क्योंकि न तो उसे कैलास पर्वत के बारे में कोई ज्ञान रहा होगा, न ही वह बर्फ़ीले स्थान के विषय में कुछ जानता होगा। नहीं तो वह इस प्रकार का वर्णन नहीं करता, जैसा मैदानी इलाक़ों का होता है। लगता है 'शिव पुराण' की कहानी काल्पनिक है, या जिसने भी लिखी है, हमारी सनातन संस्कृति का मज़ाक उड़ाने के लिये ही लिखी है वरना 'शिव पुराण' में इतने सारे गपोड़े नहीं होते।

प्रश्न 7. घर के बाहर अनेकों वर्षों तक घमासान युद्ध चलता रहा और उसकी आवाज माता जी को सुनाई नहीं दी? या उनके कानों में इतनी मैल जम जाती थी कि उसे युद्ध की आवाज़ बिल्कुल सुनाई नहीं दी? लगता है माता पार्वती ने पूरा जीवन नहाने में ही बिताया होगा।

प्रश्न 8. क्या गणेश जी बिना खाए-पीये इतने लम्बे समय तक लड़ते रहे और बच्चे के बच्चे ही रहे? (बालक गणेश इतने वर्षों तक लड़ता रहा और उसकी आयु उतनी ही रही); कैसे सम्भव है?

प्रश्न 9. क्या त्रिलोकी नाथ शंकर भगवान को मालूम ही नहीं पड़ा कि वह उनका (पार्वती) पुत्र है? यदि मालूम नहीं पड़ा तो वे कैसे 'त्रिलोकी नाथ'-तीनों लोकों के स्वामी-कहाते हैं?

प्रश्न 10. समस्त संसार का संहार करने वाला 'भगवान शिव-शंकर' एक नन्हे बालक 'गणेश' से युद्ध में परास्त हो गया

और अपनी जान बचाने के लिये उसे 'ब्रह्मा' और 'विष्णु' तथा उनकी सेना की सहायता माँगनी पड़ी? (सब का संहार करने वाला 'शिव' जिसका दूसरा नाम 'महेश' भी है, वह एक बालक से लड़ नहीं पाया! कैसी अनहोनी बात है?)

प्रश्न 11. क्या गणेश इतना शक्तिशाली था कि उसके समक्ष 'ब्रह्मा', 'विष्णु', और स्वयं 'महेश' (शिवजी) तीनों तथा उनकी समस्त सेना भी मुकाबला नहीं कर पाई? (यह तीनों के लिये अपमानजनक बात लगती है जो असम्भव है।)

प्रश्न 12. जिस शंकर भगवान् के क्रोधित होने पर पूरा ब्रह्माण्ड थर-थर काँपता है, वह ब्रह्मा और विष्णु के कहने पर छल-कपट से गणेश को मृत्यु के घाट उतारता है, ऐसा अनुचित कर्म एक योगी के लिये कहाँ तक उचित है? क्या भगवान् भी किसी बेक़सूर प्राणी की धोखे से हत्या करता है? यदि हत्या करता है तो वह भगवान कहाने योग्य नहीं हो सकता! है न?

प्रश्न 13. पार्वती की माँग पर शिवजी ने अपनी सेनाओं को गणेश जी के कटे सिर को ढूँढ़ने का आदेश दिया परन्तु कटा सिर नहीं मिला। (क्या तीनों लोकों के नाथ 'त्रिलोकी नाथ' को भी मालूम नहीं पड़ा कि सिर कट कर कहाँ गिरा था?)

प्रश्न 14. माता पार्वती की ज़िद् पर शिवजी ने गणेश को फिर से जीवित किया और चूँकि बालक गणेश का कटा हुआ सिर बहुत ढूँढ़ने पर भी नहीं मिला और उसके स्थान पर एक हथिनी के नवजात शिशु का सिर काटकर लगाया गया और वह बालक 'गणपति' के नाम से प्रसिद्ध हो गया। यहाँ अनेक शंकाएँ उत्पन होती हैं: 1. एक बालक के कटे धड़ पर हथिनी के नवजात शिशु का सिर किसने लगाया अर्थात् वह शल्यक्रिया किस वैद्य या डॉक्टर ने की थी? 2. आप ही बताएँ कि क्या किसी हाथी का सिर एक मनुष्य के बच्चे की गर्दन पर लगाया जा सकता है? नहीं! 3. मान लो कि वह सम्भव हो भी गया तो हाथी के सूंड वाले सिर का मुँह ऊपर आकाश की ओर होना

चाहिये, परन्तु जब हम लोक में गणपति की तस्वीर को देखते हैं तो उसमें वह सामने की ओर है जो एक हास्यास्पद अनहोनी कथा है।

प्रश्न 15. मनुष्य की ज्ञानेन्द्रियों का केन्द्र मस्तिष्क होता है। हाथी के मस्तिष्क में पशुओं की ज्ञानेन्द्रियाँ होंगी तो गणपति का स्वभाव कैसा होना चाहिये? सिर पशु का और धड़ मनुष्य का हो, ऐसा प्राणी न कभी हुआ है, और न ही कभी हो सकता है। प्रकृति नियम के विरुद्ध होने से "गणपति की प्रतिमा" मात्र काल्पनिक है जिससे अनेक बातें सीखी जा सकती हैं। इससे यही प्रमाणित होता है कि पुराणों में अनेक घटनायें मिश्रित हैं।

प्रश्न 16. शाकाहारी पशु मात्र घास, हरी सब्जियाँ अथवा फल-फूल ही खाता है परन्तु हमारे गणपति महाराज मात्र मोदक (लड्डू) ही क्यों खाना पसन्द करते हैं? (इसका सरल समाधान है कि जो मिष्टान्न पण्डितों को प्रिय लगता है, गणपति को भी उसी का भोग करने-कराने का ढोंग करते हैं। इसी भोग के बहाने पण्डितों का पेट भरता है। क्यों न हो, पाषाण (मिट्टी की) होने के कारण, प्रतिमा किसी भी पदार्थ का भोग नहीं लगा सकती है। खाना-पीना जीवितों के लिये सम्भव है, जड़ मूर्तियों के लिये नहीं।

प्रश्न 17. कोई भी बुद्धिजीवी मनुष्य रोज़ मर्रा की सवारी के लिये तेज़ रफ़्तार वाला वाहन रखना चाहता है परन्तु श्री गणेश जी ने अपना वाहन एक मूषक (चूहे) को चुना। भला एक छोटा सा प्राणी - चूहा इतनी भारी काया वाले श्री गणेश जी को कैसे उठा कर भाग सकता है? वास्तव में मूषक किसी भी सवारी के काम नहीं आता।

प्रश्न 18. थोड़ा सा विचारिये कि क्या बैल (शिवजी की सवारी), शेर (माता पार्वती की सवारी) और चूहा (गणेश जी की सवारी) - तीनों एक ही घर में एक साथ रह सकते हैं? क्या हमारे पूज्यनीय देवी-देवताओं को और कोई सवारी नहीं मिली?

प्रश्न 19. कैलास पर्वत पर इतनी कड़ाके की सर्दी में क्या ऐसी तीनों सवारियाँ रह सकती हैं? उनकी खुराक क्या होगी तथा कहाँ से आती होगी?

प्रश्न 20. पहरे के लिये गणेश को बनाने की क्या आवश्यकता थी, घर में शिवजी का नन्दी बैल और माता जी का शेर तो पहले से ही विद्यमान था। है ना?

प्रश्न 21. हाथी का शरीर काला होता है परन्तु गणपति का मुँह और शरीर के सब अंग गोरे रंग के होते हैं, भला यह कैसा रहस्य है?

ऐसे अनेक प्रश्न हो सकते हैं जिनका उत्तर सभी जानना चाहेंगे। संक्षेप में गणपति जी की काल्पनिक प्रतिमा से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण रहस्यों की जानकारी प्रस्तुत करते हैं।